

IBD वाले अपने दक्षिण एशियाई रोगियों के साथ सांस्कृतिक रूप से उचित संवाद करना

दक्षिण एशियाई रोगी न केवल अपनी बीमारी से लड़ते हैं बल्कि ऐसे अनेक सांस्कृतिक कलंकों और परिवार के प्रभावों से भी लड़ते हैं जो उनको उपयुक्त देखभाल हासिल करने से रोकते हैं। स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर के रूप में, अपने संवादों के दौरान इन विचारों से अवगत होना महत्वपूर्ण होता है।



अपने रोगी को नेक इरादे वाले परिवार और दोस्तों से मिलने वाली सलाह को समझने में मदद करें

- ✓ बचपन से ही दृढ़ता से रोपे गए हिन्दी/उर्दू वाक्यांश **“लोग क्या कहेंगे?”** को समझें जो बताता है कि लोगों को उनकी गतिविधियों के संबंध में उनके लिए जो कुछ सर्वश्रेष्ठ हो, उसके बजाय दूसरों द्वारा कही बातों के बारे में अधिक चिंतित होना चाहिए - और इसमें स्वास्थ्य संबंधी स्थितियाँ या उपचार भी शामिल होते हैं।
- ✓ यदि जरूरी हो तो अनुवादक का उपयोग करने पर विचार करें। अनुवाद करने के लिए परिवार का उपयोग न करें, क्योंकि वे रोगी के प्रति सम्मान के कारण आपके संदेश के अर्थ को भटका सकते हैं।
- ✓ दक्षिण एशियाई समुदायों में पूरक या वैकल्पिक चिकित्सा (CAMs) पारंपरिक पश्चिमी दवाओं और सर्जरी की तुलना में अधिक पसंदीदा हो सकती हैं। अनुशंसित उपचारों के स्पष्ट प्रमाण प्रदान करने और ज्ञात या अज्ञात परिणाम और सुरक्षा पर चर्चा करने के लिए तैयार रहें।
- ✓ ऑस्टोमी सर्जरी के कलंक को मिटाएं। ऑस्टोमी सर्जरी को दक्षिण एशियाई संस्कृति में “अशुद्ध” माना जाता है और ये बहुत कलंकित मानी जाती हैं। रोगियों और उनके परिवारों से इस बारे में बात करें कि यह किस तरह से ऐसा जीवन रक्षक उपाय है जो जीवन की जीवन स्तर कर सकता है। रोगियों को ऑस्टोमी सहायता समूहों से जोड़ें जहाँ रोगी अपने अनुभव साझा करते हैं, जिसमें SAIA का आईबीडीसिस समुदाय (www.facebook.com/groups/ibdesis) शामिल है।
- ✓ धार्मिक निषेधों पर विचार करें। कोलोनोस्कोपी, एनीमा, या सपोसिटरीज़ के उपयोग पर आपत्ति जताई जा सकती है। इन रोगियों के लिए, उपचार की प्रतिक्रिया की निगरानी के लिए बायोमार्कर और अन्य परीक्षणों की जरूरत पड़ सकती है।
- ✓ खाद्य समूहों को फिर से पेश करने और सांस्कृतिक रूप से समावेशी तरीके से आहार में सुधार करने पर काम करने के लिए पोषण परामर्श लें। शाकाहारियों सहित रोगियों को यह नहीं पता होगा कि अपने आहार में मसाले, फाइबर या प्रोटीन को कैसे शामिल किया जाए। ऐसे आहार विशेषज्ञ हैं जो विशेष रूप से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल स्थितियों वाले दक्षिण एशियाई लोगों का इलाज करते हैं।
- ✓ क्लिनिकल ट्रायल भागीदारी, रोगी और/या परिवार “शोध” से डर सकते हैं या परीक्षणों को अंतिम विकल्प मान सकते हैं और इसलिए उनमें भाग लेने के लिए अनिच्छुक हो सकते हैं। रोगियों को क्लिनिक में रहते हुए भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, न कि फोन द्वारा। उन्हें अध्ययन की जानकारी प्रदान करें, बताएं कि क्लिनिकल ट्रायल कैसे काम करते हैं, और जीवन की गुणवत्ता पर संभावित लाभों पर चर्चा करें।
- ✓ उपचार के लक्ष्यों पर सहमत हों। नैदानिक लक्ष्यों को प्राप्त करना रोगियों के लिए जीवन स्तर के लक्ष्यों जितना महत्वपूर्ण न हो। साझा निर्णय लेने की प्रक्रिया का उपयोग करके रोगियों के साथ लक्ष्यों पर चर्चा करना और सहमत होना महत्वपूर्ण होता है।